प्रार्थना का सार

प्रभु की आदर्श प्रार्थना उसकी सत्ता की सहज स्तुति के अतिरिक्त अन्य कोई चीज़ नहीं है। तुम उसकी स्तुति सौदा करने की भावना से नहीं करते, वरन् उसके यथार्थ स्वरूप की आत्मविस्मृतिपूर्ण श्लाघा की भावना से करते हो। तुम उसकी स्तुति करते हो क्योंकि वह स्तुत्य है। तुम्हारी स्तुति अनन्त प्रकाश, अनन्त शक्ति एवं अनन्त आनन्द स्वरूप उसकी यथार्थ सत्ता का सहज गुणग्राही प्रत्युत्तर है।

सब स्तोत्र तथा प्रार्थनायें परमात्मा के शाश्वत 'सत्य' की ओर जाती हैं और वे उन लोगों को परमात्मा में निमग्न कर देती हैं जो मौन तथा अनन्त पूजा के साथ उनका उच्चारण करते हैं।

सहज प्रार्थना से बढ़कर कोई भी चीज़ उत्कृष्ट नहीं होती। वह प्रार्थना गुणग्राही आनन्द से परिपूर्ण मानवीय हृदय से प्रवाहित होती है। वह उन्मुक्त आत्मा का आत्म–प्रकाशन होती है।

अपने सर्वोच्च रूप में प्रार्थना प्रेमी और प्रियतम के मायावी द्वैत शासन के लिये कोई स्थान नहीं रखती। वह व्यक्ति की अपनी ही सत्ता की पुनः प्राप्ति होती है।

अवतार मेहेरबाबा

प्रार्थना का महत्व

अन्ज़ार : प्रार्थना की ज़रूरत को बाबा ने किस सीमा तक महत्व दिया है ?

एरच : प्रार्थना करने का महत्व इस बात से प्रकट होता है कि बाबा ने हमें "परवरदिगार प्रार्थना" और "प्रायश्चित प्रार्थना" दी।

अन्ज़ार : प्रार्थना की तुलना बाबा के नाम–जप से किस प्रकार कर सकते हैं ?

एरच : बाबा ने हमें बताया है कि उनके नाम का जप करना स्वयं एक प्रार्थना है और पूरी तरह एकाग्रचित्त होकर हृदय से उनके नाम का जप करना सबसे बड़ी प्रार्थना है जिसे कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार कर सकता है। इसके अलावा, इसके लिये किसी विशेष समय अथवा जगह की ज़रूरत नहीं है।

जब बाबा हमारे साथ थे, वे चाहते थे कि हम "परवरदिगार प्रार्थना" कहें। बाबा ने मानवता को केवल "परवरदिगार प्रार्थना" और "प्रायश्चित प्रार्थना" ही नहीं दी बल्कि वे इन प्रार्थनाओं में स्वयं भी भाग लेते थे। मुझे एक बार की घटना याद है जब उन्होंने मुझसे "परवरदिगार प्रार्थना" को उस समय कहने के लिये कहा जब सारे शिष्य मंडली हाल में इकट्ठा थे। उस समय मुझसे एक ऐसी भूल हो गई जिसका मुझे अभी तक पछतावा है। इस प्रार्थना को कहने के समय खड़े होने का नियम है। इसलिये हम सब बाबा के साथ खड़े हो गये। क्योंकि कूल्हे की चोट के कारण बाबा अधिक देर तक खड़े नहीं हो सकते थे, इसलिये वे मुझसे प्रार्थना को जल्दी जल्दी कहने के लिये इच्छा प्रकट करते रहे। जैसे ही मैंने जल्दी जल्दी कहने की कोशिश की, मुझे ऐसा लगा कि मेरे द्वारा प्रार्थना का जल्दी जल्दी उच्चारण ऐसा प्रतिध्वनित हो रहा था जैसे कि स्टेशन से तेज गति से रेलगाड़ी जा रही थी। इस कल्पना से मैं जोर से हँसने लगा, लेकिन बाबा ने कुछ नहीं कहा और मेरी मूर्खता को सहते रहे।

जब सब कुछ ख़त्म हो गया, उन्होंने मेरी हँसी का कारण पूछा और मैंने बताया कि उन्होंने मुझसे जल्दी जल्दी प्रार्थना कहने के लिये कहा था, और ऐसा करने पर मैंने अनुभव किया कि इसे जल्दी जल्दी कहना बेकार था।

बाबा ने मुझसे कहा, "इस प्रार्थना में मेरे भाग लेने के महत्व को तुम नहीं समझते हो। यह भावी मानवता की सहायता करेगा। इस समय मेरे इस प्रार्थना में भाग लेने से, जब कोई व्यक्ति यह प्रार्थना कहेगा, उसे लाभ होगा। इस समय मैं जिस तरह से पंगु और खड़े होने में असमर्थ हूँ, अपनी ऐसी असहायता के बावजूद, मैं प्रार्थना में तुम्हारे लिये नहीं बल्कि भावी मानवता के लिये भाग लेता हूँ। जब मैं शरीर छोड़ दूँगा और तुम्हारे बीच में नहीं रहूँगा, उस समय जो कोई भी इस प्रार्थना को कहेगा, उसे लाभ होगा।"

इससे परवरदिगार प्रार्थना के महत्व का पता चलता है। दर्शन प्रोग्रामों में भी प्रियतम बाबा "परवरदिगार प्रार्थना" और "प्रायश्चित प्रार्थना" में भाग लेते थे। अतः हम यह याद रखते हुये इन प्रार्थनाओं को कहें कि बाबा ने इसमें भाग लिया और वह चाहते थे कि हम इसे दिन में एक बार और अगर संभव हो तो दो बार कहें। अपने पिछले अवतरण में मोहम्मद की तरह बाबा ने दिन में पाँच बार अभ्यास करने के लिये नहीं कहा, क्योंकि पूरे जीवन में केवल एक बार कहना भी सहायक होगा।

(संदर्भ–पुरातन पुरुष, संकलन नौशेरवाँ अन्ज़ार, पृष्ठ 24)

अवतार मेहेरबाबा का संक्षिप्त परिचय

पुरातन पुरुष अवतार मेहेरबाबा का भौतिक जन्म 25 फरवरी 1894 ई. को लगभग 5 बजे सुबह भारत की प्रसिद्ध नगरी पूना में हुआ था। उनके पिता शेहेरयार जी मुन्देगर ईरानी थे और उनकी माता शीरिन बानू थीं। वे ईरान के पुराने निवासी जरतोस्ती पारसी थे। मेहेरबाबा का नाम मेहेरवान शेहेरयार ईरानी रखा गया। उनके पिता एक ऊँचे दरवेश थे। उन्होंने 13 वर्ष की आयु से ही दुनिया से वैराग्य लेकर लगभग 18 वर्ष तक ईरान और भारत में ईश्वर की खोज के लिये यात्रा की थी। लगभग 10 वर्ष तक ईरान में ईश्वर की खोज में घूमने के बाद शेहेरयार जी भारत आ गये थे, और भारत में भी उन्होंने ईश्वर की खोज में अपनी यात्रा ज़ारी रखी।

भारत में एक ईश्वरीय अन्तः प्रेरणा के अनुसार उन्होंने संन्यास छोड़कर गृहस्थ जीवन अपनाया और शीरिन माई के साथ उनका विवाह हुआ। मेहेरबाबा (मेहेरवान) उस दम्पत्ति की दूसरी सन्तान थे। गृहस्थ जीवन में आने के बाद शेहेरयार जी पूना में आबाद हो गये थे।

मेहेरबाबा अपने अवतारी स्वरूप में अवतारी सुन्दरता तथा अवतारी लक्षण लिये हुए अवतरित हुए थे। अभी यह पूरे

एक वर्ष के भी नहीं हुए थे कि एक दिन घर के आँगन में एक विषधर नाग से लिपटे खेलते हुए पाये गये। वह हर अर्थ में स्वस्थ और प्रसन्नचित्त बालक थे, नटखट थे, सुन्दरता के प्रेमी तथा मलिन और तुच्छ चीज़ों से दूर रहने वाले थे और अपनी सज्जनता, समझदारी व निःस्वार्थपरता के लिये प्रसिद्ध थे। वह नियम के अनुसार कार्य करते थे, समय के पाबन्द थे, असाधारण रूप से चुस्त और फुर्तीले थे, तेजी से चलने वाले और तेज़ दौड़ने वाले थे।

बचपन में ही इनकी रुचि कविता और संगीत में थी। 9 वर्ष की आयु में ही शीराज के महान कवि एवं सद्‌गुरु हाफ़िज़ का विश्व विख्यात ग्रन्थ ''दीवाने हाफ़िज़'' अपने पिता को पाठ करते सुनते रहकर ही इनको कण्ठाग्र हो गया। वे नित्य 4 बजे प्रातः उठकर प्रभाती गाते थे। मकान के पास से होकर गुज़रने वाले नर–नारी इनके मधुर कण्ठ से प्रभाती सुनकर मुग्ध हो जाते थे और प्रायः तब तक मकान की दीवार से सटे खड़े सुनते रहते थे जब तक कि इनका वह कार्यक्रम समाप्त नहीं हो जाता था। अपनी इस छोटी आयु में ही वह सुन्दर कवितायें रचने लगे जिनका प्रकाशन प्रतिष्ठित पत्रों में होने लगा।

इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा सेन्ट विन्सेन्ट हाईस्कूल में प्राप्त की। इसी समय वह सहपाठी छात्रों को हिल– मिलकर रहने तथा आचरणमय जीवन बिताने की दिशा में पथ–प्रदर्शन देने लगे। छात्रों के चरित्र–निर्माण के हेतु व विश्व में रंग, देश, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वर्ग के फैले भेद–भावों से उन्हें बचाकर उनमें यथार्थ सेवा व प्रेम भाव भरने के लिये इन्होंने ''कासमोपोलिटन क्लब'' की स्थापना की और इस प्रकार भाई–चारा स्थापित करने का कार्य विद्यार्थी जीवन में ही अपने हाथ में ले लिया। हाईस्कूल की शिक्षा समाप्त करके मेहेरबाबा पूना के डेकन कॉलेज में भर्ती हो गये। विद्या ग्रहण करने में मेहेरवान बहुत तेज थे। विद्यार्थी जीवन में उन्हें कविता, साहित्य तथा आध्यात्मिक साहित्य में गहरी दिलचस्पी थी।

उसी समय पूना में हज़रत बाबाजान नाम की एक सूफ़ी सद्‌गुरु रहती थीं जो लगभग 110 वर्ष की थीं। मेहेरवान उनसे बहुत प्रेम करते थे और हज़रत बाबाजान भी मेहेरवान को बहुत चाहतीं थीं। 1913 ई. में, जब मेहेरवान 18 वर्ष की आयु के थे; वह एक दिन डेकन कॉलेज से लौटते हुए साइकिल पर घर जा रहे थे। उनको देखकर हज़रत बाबाजान

भक्तों के बीच से झपटकर मेहेरवान के पास आईं। मेहेरवान साइकिल से उतर पड़े और दोनों की चितवन एक–दूसरे से मिली। फिर बाबाजान ने मेहेरवान के मस्तक को भृकुटी के बीच में चूमा और खामोशी से अपने स्थान को लौट गईं। सद्‌गुरु हज़रत बाबाजान ने उस चुम्बन के द्वारा मेहेरवान को ब्रह्म–चेतना प्रदान कर दी, अर्थात् मेहेरवान को ईश्वर–साक्षात्कार अथवा आत्मज्ञान प्रदान कर, मायावी पर्दा हटा दिया। 1914 ई. में एक दिन अपने पास बैठे हुए लोगों के सामने मेहेरवान की ओर इशारा करते हुए हज़रत बाबाजान ने कहा– ''मेरा यह बेटा दुनियाँ को जड़ से हिला देगा और मानव जाति की बहुत भलाई करेगा।'' एक और अवसर पर उन्होंने भक्तों की भीड़ के बीच में खुला ऐलान किया था, ''मेहेरवान अपनी ईश्वरीय शक्ति और प्रेम से दुनियाँ को चकित कर देगा।''

ब्रह्म–चेतना प्राप्त हो जाने से मेहेरवान तीन दिन तक बिल्कुल विदेह अवस्था में रहे, और उसके बाद नौ माह तक अर्द्धचेतन अवस्था में रहे।

1915 ई. में मेहेरवान अन्तःप्रेरणा से शिरडी के सद्‌गुरु साईं बाबा के पास गये। जब वह साईं बाबा के निकट पहुँचे और उन्हें साष्टांग प्रणाम किया तो साईं बाबा ने पूरी आवाज़

से चिल्लाकर केवल एक शब्द ''परवरदिगार !'' कहा; जिसका अर्थ है सृष्टि को धारण करने वाला सर्वशक्तिमान ईश्वर। इस प्रकार सद्‌गुरु साईं बाबा ने मेहेरवान में ईश्वर के अवतरित होने की घोषणा की। फिर साईं बाबा ने मेहेरवान को साकोरी के सद्‌गुरु उपासनी महाराज के पास जाने का आदेश दिया। उपासनी महाराज ने मेहेरवान को देखकर एक पत्थर फेंककर मारा जो मेहेरवान के मस्तक पर उसी स्थान पर लगा जहाँ हज़रत बाबाजान ने चूमा था। पत्थर की चोट से उनके मस्तक से खून बह निकला और उस चोट का यह परिणाम हुआ कि उस क्षण से मेहेरवान को शरीर का और सृष्टि का भान धीरे धीरे होने लगा और 1921 ई. के अन्त तक मेहेरवान को पूर्ण मानवीय चेतना प्राप्त हो गई और साथ–साथ उनकी ब्रह्म–चेतना ज्यों की त्यों कायम रही। इस प्रकार वह 28 वर्ष की आयु में पूर्ण हो गये।

इन तीन सद्‌गुरुओं के अलावा मेहेरवान के दो सद्‌गुरु और थे– केडगाँव के नारायण महाराज और नागपुर के ताजुद्दीन बाबा। मेहेरवान समय–समय पर इन दोनों सद्‌गुरुओं के पास भी जाते रहे थे।

पूर्ण हो जाने पर मेहेरवान ''मेहेरबाबा'' कहलाने लगे जिसका अर्थ है ''दयालु पिता।'' उस समय तक उनकी मण्डली में 12 मुसलमान, 11 जरतोस्ती और 22 हिन्दू शिष्य आ चुके थे। उन 45 शिष्यों को साथ लेकर वह 1922 में पूना से बम्बई (अब मुंबई) पैदल गये और वहाँ दादर में मन्ज़िल–ए–मीम (गुरु–गृह) नाम का आश्रम चालू किया। बाबा ने उस आश्रम में इन शिष्यों को कठोर आध्यात्मिक अनुशासन, निःस्वार्थ सेवा और आज्ञाकारिता की ट्रेनिंग दी। कभी–कभी मेहेरबाबा सड़कों पर भीख माँगने वाले लँगड़े, लूले, अन्धे, अपाहिज भिखारियों को बुलाकर उन्हें भोजन कराते, माला पहनाते और वस्त्र देते थे। 1923 ई. में मेहेरबाबा ने मन्ज़िल आश्रम समाप्त कर दिया और अपने शिष्यों को लेकर आरनगाँव चले आये, जो अहमदनगर से 6 मील दक्षिण की तरफ है। मेहेरबाबा ने वहाँ सड़क के किनारे एक नीम के पेड़ के नीचे धूनी कायम की और वहीं आबाद हो गये। शीघ्र ही वह स्थान मेहेराबाद के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह आरनगाँव का वह क्षेत्र था जहाँ मौला बाबा नाम के एक सन्त ने एक कुटी बनाकर निवास किया था और देह छोड़ने के पूर्व अपने जनों को निर्देश दिया था कि उनकी समाधि वहीं बनाई जाये क्योंकि साहिबे–ज़माँ (अवतार) मेहेरबाबा यहीं आकर ठहरेंगे।

मेहेराबाद में मेहेरबाबा ने मानव सेवा की कई संस्थायें चालू कीं– जैसे, हज़रत बाबाजान स्कूल, धर्मार्थ अस्पताल, धर्मशाला, कुष्ठ रोगियों और अनाथों के लिये आश्रम। स्कूल में बिना भेदभाव के सभी जातियों के बच्चों को मुफ़्त शिक्षा दी जाती थी; अस्पताल में रोगियों का मुफ़्त इलाज होता था; कुष्ठ रोगियों को बाबा अपने हाथ से स्नान कराते और वस्त्र पहनाते थे; स्कूल में पढ़ने वाले तथाकथित अछूत जातियों के बच्चों को बाबा अपने हाथ से नहलाते थे और उनके कपड़े धोते थे। इस प्रकार बाबा ''सेवा योग'' की ट्रेनिंग देते थे।

मेहेरबाबा ने उन दिनों काठ की बनी एक कोठरी के अन्दर रहकर इस अवतारी काल में दुनियाँ को एक अद्वितीय आध्यात्मिक ग्रन्थ स्वयं अपने हाथ से लिखकर दिया है जैसा कि किसी भी अवतारी काल में नहीं किया है। बाबा का प्रकटीकरण हो जाने के पश्चात् इस अमर ग्रन्थ का प्रकाशन होना है। इसके पूर्व विभिन्न रूपों में अवतार के द्वारा उद्‌घाटित रहस्यों, उपदेशों तथा व्याख्यानों सम्बन्धी ग्रन्थ समकालीन शिष्यों या सम्बन्धित निकट सम्पर्क के कवि मनीषियों द्वारा लिखित या वर्णित हैं; किन्तु यह ग्रन्थ स्वयं अवतार द्वारा लिखित सर्वप्रथम अधिकृत ग्रन्थ होगा।

उस ग्रन्थ को लिखने के बाद मेहेरबाबा ने लिखना बन्द कर दिया और उसके कुछ समय बाद ही पैसा छूना भी बन्द कर दिया। 10 जुलाई 1925 ई. से उन्होंने मौन धारण कर लिया जो 44 वर्ष तक जीवन–पर्यन्त अखण्ड रहा और मौन में ही उन्होंने अपना अवतारी कार्य पूरा किया।

इस महानिधि के अलावा बाबा ने दुनियाँ को अनेक बहुमूल्य ग्रन्थों का भण्डार दिया है जो उन्होंने समय–समय पर अपने लम्बे मौन में वर्णमाला तख़्ती या हाथ के संकेतों द्वारा अपने शिष्यों व प्रेमियों को उपदेशों, प्रवचनों, व्याख्यानों या प्रश्नोत्तर के रूप में दिये हैं। न्यूयार्क (अमेरिका) की डॉडमीड एण्ड कम्पनी ने बाबा का एक "God Speaks" (ईश्वर वाणी) नामक विख्यात ग्रन्थ प्रकाशित करने का गौरव प्राप्त किया है। यह ग्रन्थ ईश्वर पर इल्मुख यक़ीन दिलाने के लिये अपूर्व है। चेतना के सम्बन्ध में बाबा ने इसमें जो रहस्य खोले हैं इससे दुनिया के शिरोमणि वैज्ञानिक और प्रख्यात मनीषी भी चकित रह गये हैं।

विश्व की उच्च कोटि की कितनी ही विख्यात अधिकृत आध्यात्मिक हस्तियों ने बाबा को अपने दैवी पथ–प्रदर्शक के रूप में स्वीकार किया है। अनेक प्रेमियों, विशेष रूप से

मस्तों ने, इनमें राम, कृष्ण, क्राइस्ट, बुद्ध, मुहम्मद, जुरथस्त्र, गुरु नानक के रूपों में भगवान के अपार सौन्दर्य स्वरूप के दर्शन किये हैं। कितने ही मस्तों ने इनमें अल्लाह के नूर को देखकर उस तेज को सहन करना अपने लिये कठिन पाया है। इस तरह के अनेक वृतान्त इंग्लैण्ड वासी बाबा के प्रियजन डॉ. विलियम डंकिन द्वारा लिखित "The Way Farers" (दि वे फेयरर्स, हिन्दी अनुवाद ''पथिक'') नामक विशाल एवं अद्‌भुत अंग्रेज़ी ग्रन्थ में पढ़ने को मिल सकते हैं। बाबा के मस्त कार्यों से सम्बन्धित इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को पढ़ने से पता चलता है कि आध्यात्मिक जगत का कार्य कैसा विचित्र और उतार चढ़ाव का है तथा इस क्षेत्र में देश, जाति, रंग, धर्म आदि भेदों का कोई प्रश्न ही नहीं है; और ये सारी संकीर्णतायें मायावी द्वैत के अनुभव मात्र हैं। मेहेरबाबा ने इस वैज्ञानिक युग में आध्यात्मिक मार्ग के गूढ़ रहस्यों को जैसा उद्‌घाटित किया है वैसा अपने किसी भी पूर्व अवतारी काल में नहीं किया।

बाबा कहते हैं– ''मैं सिखलाने के लिये नहीं बल्कि जगाने के लिये आया हूँ। ... ईश्वरीय योजना में मेरा निर्धारित कर्तव्य थकी हुई दुनिया को प्रेम की नई देन देने का है।''

मेहेरबाबा किसी को धर्म परिवर्तन करने को नहीं कहते हैं और न वह किसी एक धर्म से मतलब रखते हैं।

वह कहते हैं– ''मैं किसी धर्म का नहीं हूँ, सब धर्म मेरे हैं। मेरा धर्म प्रेम है।'' और ''पूजा के समान धर्म दिल से होना चाहिये। यदि लोग गिरजाघरों, अग्निमठों, मन्दिरों और मस्जिदों का निर्माण कराने की बजाय प्रियतम ईश्वर के परम निवास करने के लिये अपने हृदयों में ईश्वर का घर स्थापित करें तो मेरा कार्य पूरा हो जायेगा।''

वह कहते हैं– ''मेरा कोई सम्बन्ध राजनीति से नहीं है। मेरे लिये सब धर्म बराबर हैं।, और सब जातियाँ व मत मुझको प्यारे हैं। मैं निर्जन स्थान अथवा आश्रम स्थापित करने के लिये नहीं आया हूँ। मैं उनका निर्माण अपने विश्वव्यापी कार्य के उद्देश्य से करता हूँ और वह उद्देश्य पूरा हो जाने पर उनको पुनः–पुनः भंग कर देता हूँ।''

अस्तु, अवतारी कार्य के लिये बाबा ने प्रारम्भिक काल में जो आश्रम बनवाये थे वे सब उन्होंने खुदवाकर मिट्टी में मिलवा दिये थे। उनके इस समय बचे हुए दो आश्रमों, मेहेराबाद और मेहेराज़ाद, को उनके दो शिष्यों ने बाबा से बहुत प्रार्थना करके खरीद लिया था। इसी से वे आज तक बचे खड़े हैं।

बाबा कहते हैं– ''विश्व मेरा आश्रम है और प्रत्येक हृदय मेरा घर है; किन्तु मैं अपने को केवल उन्हीं हृदयों में प्रकट करता हूँ जिनमें मेरे सिवाय और सब कुछ नष्ट हो जाता है।''

बाबा ने अपना विश्वव्यापी कार्य फैलाने के लिये लगभग 10–12 बार विदेशों की यात्रा की थी और वहाँ अपने ईश्वरीय कार्य की नींव डाली थी, जो आज विश्व भर में चारों ओर तेजी से उजागर होता दिखाई देता है। आज पश्चिमी तथा पूर्वी दुनियाँ के देशों में अवतार मेहेरबाबा की ईश्वरीय हस्ती का उघार तेजी से होता हुआ स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

1931 ई. में बाबा पहली बार पश्चिम की यात्रा पर गये थे। गोल मेज सभा में भाग लेने के लिये महात्मा गाँधी उसी समुद्री जहाज से लन्दन जा रहे थे। उस यात्रा के दौरान गाँधीजी कई बार जहाज पर बाबा से मिले और उनके मौन तथा उनकी हस्ती से अत्यन्त प्रभावित हुए। महात्मा गाँधी की प्रार्थना पर बाबा ने अपने हस्तलिखित ग्रन्थ के एक पृष्ठ का कुछ अंश उनको दिखा देने की कृपा की थी जिसको पढ़कर गाँधीजी कुछ देर के लिए चकित रह गये थे और बाद में उन्होंने बाबा से इस ग्रन्थ के और बाबा की अन्य कृतियों के प्रकाशन के सम्बन्ध में वार्ता की थी तथा उन्होंने बाबा की रचनाओं का स्वयं ही अनुवाद करने की इच्छा व्यक्त की थी।

गरीब, आर्त और भारत के सामाजिक कोढ़ से ग्रसित कथित अछूतों के लिये बाबा ने अपूर्व एवं अद्‌भुत कार्य किया है। इन कथित अछूतों के अतिप्रिय नेता डॉ. अम्बेडकर ने भी बाबा का दर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त किया। अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के एक बुनियादी अध्यक्ष मौलाना मजहरुल बार–एट–ला बाबा के प्रेमकार्य से अत्यधिक प्रभावित होकर बाबा के प्रेमी हो गये। देश की आज़ादी की लड़ाई में जीवन लगाने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं में से भी कितनों को बाबा का दर्शन तथा प्रेमाशीर्वाद प्राप्त हुआ।

मेहेरबाबा किसी को शिक्षा–दीक्षा इत्यादि देकर अपना शिष्य नहीं बनाते थे। वे जिज्ञासुओं से कहते थे– ''मुझसे प्रेम करो और मुझसे प्रेम करो, और तब तुम मुझको पा जाओगे। मैं विश्व का स्वामी हूँ और अपने प्रेमियों के प्रेम का दास हूँ।'' आज दुनिया में हर जाति, धर्म, रंग, देश और हैसियत के लाखों स्त्री पुरुष व बच्चे अवतार मेहेरबाबा के प्रेम के प्रभाव में आ चुके हैं और वे सब उनके परब्रह्म परमात्मा होने में पूर्ण विश्वास रखते हैं।

अवतार मेहेरबाबा का कार्य 30 जुलाई 1968 ई. मंगलवार को ही पूर्ण हो गया था। उस दिन शाम को उन्होंने मेहेराज़ाद

में ऐलान किया था, ''मेरा कार्य हो चुका। वह मेरे पूर्ण सन्तोष के अनुसार पूरा हो गया है। इस कार्य का फल भी पूर्ण होगा।''

शुक्रवर, 31 जनवरी 1969 को अवतार मेहेरबाबा ने मेहेराज़ाद में, दोपहर के समय 12:15 बजे अपनी घनिष्ठ मण्डली की उपस्थिति में अचानक भौतिक शरीर छोड़ दिया। उनका शरीर मेहेराबाद पहाड़ी (अहमदनगर– (महाराष्ट्र) से 5 मील दूर) के ऊपर वर्षों पहले से बनी उनकी समाधि में सात दिन तक खुला रखा गया और देश–विदेश के हजारों प्रेमियों ने आकर उनका दर्शन किया। 7 फरवरी, 1969, शुक्रवार को दोपहर 12:15 बजे के बाद उनका भौतिक शरीर समाधि में हमेशा के लिये बन्द कर दिया गया। उनके शरीर छोड़ने के बावजूद लोगों के ह्रदयों को ईश्वर के प्रेम के प्रति जागृत करने का उनका मौन कार्य आज भी चल रहा है।

**

मेहेर चालीसा

(केशव नारायण निगम द्वारा रचित)

हरि ! परमात्मा ! अल्लाह ! अहूरमज्द !
गॉड ! यज़दानहू !
जय 'मेहेर' साहिबे–ज़माँ !
जय जय निराली शानहू !!

जय भक्त उनके मस्त उनके
खींच लाते जो उन्हें भूलोक पर !
धूल उनकी सिर लगाऊँ, हिये लाऊँ–
प्रेम के उनके सहारे 'मेहेर' को मैं पाय जाऊँ।

जय बाबा ! जय अन्तर्यामी !
जय अनन्त ! जय जगदाधार !
पूरण ब्रह्म सनातन स्वामी,
अखिल विश्व के पालनहार।। 1

जय सौम्य मूर्ति ! जय शुभ,
पावन ! जय मंगलकारी !

भक्त जनन की आस एक,
जय जय अनन्त लीलाधारी।। 2

युग के राही धर्म सिपाही,
जय तप के भण्डार हरे !
दरस मात्र से गति सुधरै अरु,
क्षार होंहिं अघपुञ्ज खरे।। 3

निराकार साकार रूप,
जय नर–नारायण दोऊ !
भीतर बाहर सरग पतारन,
तुमहिं छोड़ नहिं कोऊ।। 4

भक्तन के जय 'बाबा'! जय–
जय बाबाजान के 'मेहेरवान'!
उपासनी के भण्डारी जय–जय
हे! सुर–कुल–पंकज भानु।। 5

सिद्ध जनन के शहंशाह,
जय दिव्य सनातन ज्योती !
निर्विकार जय धर्म मूर्ति !
जय शान्ति अखण्ड विभूती।। 6

तुम सन प्रीति करे से प्रानी,
तुम समान हुई जाहीं।
जनम–जनम के पातक छूटें,
अन्त मेहेरपद पाहीं।। 7

व्याकुल मानव को हो तुम,
अब पार लगाने आये।
देश जाति अरु धर्म रंग का,
भेद मिटाने आये।। 8

जगती को दिखलाने शक्ति,
भक्ति की फैलाने महिमा।
प्रकट हुये शीरींमाई से,
सत्‌जीवन की लेकर गरिमा।। 9

मैं गाऊँ क्या तुम्हरी महिमा,
शेष शारदा पार न पाहीं।
तुम हो अनन्त महिमा अनन्त,
अन्त तुमहिं में सबहि समाहीं।। 10

मर्यादा के राखन हित तुम,
मर्यादा पुरुषोत्तम बन आये।
होकर अनन्त व्यापी दिगन्त,
मर्यादा में बँधकर आये।। 11

तुमहिं बने गिरधर मीरा के,
सूरदास के श्याम।
नरसी के थे सामलिया तुम,
तुलसीदास के राम।। 12

'केशव' के तुम प्रियतम बाबा,
हिय में आन विराजे हो।
अमित कृपादृष्टि सेवक पर,
मन-मन्दिर में राजे हो।। 13

तुमहिं परस जन्मन को पापी,
आज निहाल भयो रे।
तुव पद-पंकज पाकर पावन।
त्रय सन्ताप दह्यो रे।। 14

चाहूँ नहीं जगत का वैभव,
रिद्धि सिद्धि नहिं चाहूँ।
दुनियाँ दौलत माल खज़ाना,
तुमहिं पाइ ठुकराऊँ।। 15

चाहूँ सदा सलोनी मूरत,
यहै देख हरषाऊँ।
इसको ध्याऊँ इसको गाऊँ,
इस पर बलि-बलि जाऊँ।। 16

श्रवण सुनैं तौ नाम तिहारो,
रसना तुव गुण गावै।
छोड़ जगत के फन्दे मनुवाँ,
एक तुमहिं को ध्यावै।। 17

बसो मोर नैनन में ऐसे,
तुमहि छोड़ नहिं और लखाई।
सुरति एक रट मेहेर नाम की,
दूजो और न साईं।। 18

जब जब जनम धरौं धरनी में,
सगुण रूप को पाऊँ।
सेवा भक्ति पूरी करके,
निरगुण माहिं समाऊँ।। 19

मैं चरनन को दास तिहारो,
निसदिन यहै मनाऊँ।
करो कृपा ऐसी ठाकुरजू,
तुव सेवा को पाऊँ।। 20

जब जब धरनि माहिं तुम आओ,
अधम उधारन स्वामी।
मोहिं अधम को भूल न जाना,
हौं तुम्हार अनुगामी।। 21

तुव सेवा भक्ति दर्शन हित,
मैं हूँ नर तन पाऊँ।
पाइ प्रकाश तुम्हारो प्रभुवर,
लीला देख जुड़ाऊँ।। 22

तुलसी की मैं पाऊँ भक्ति,
मीरा की वह मस्ती पाऊँ।
झूम-झूम कर नाचूँ सम्मुख,
प्रेम के आँसू बहाऊँ।। 23

भूल जगत सुध तन मन हू,
श्रीचरण टेक रह जाऊँ।
तुम्हीं साध्य आराध्य बनो मम,
और कछू नहिं चाहूँ।। 24

सूरदास की पाऊँ रसना,
लीला तुव नित गाऊँ।
निबल जान जो बाँह छुड़ाओ,
हिये बाँध रह जाऊँ।। 25

कबीरदास की मिलै फ़कीरी,
निसदिन अलख जगाऊँ।
जतन जतन से ओढ़ चदरिया,
जस की तस धर जाऊँ।। **26**

देह तजौं तो काज तिहारे,
गती जटायू पाऊँ।
शान्तिमयी तुव गोद मिले,
फिर धाम तिहारे जाऊँ।। **27**

शबरी के मैं बेर खिलाऊँ,
साग बिदुर का लाऊँ।
खाओ प्रभुजी उसी प्रेम से,
वारी तुम पर जाऊँ।। **28**

तरी अहिल्या गणिका सदना,
तरेउ अजामिल भागी।
बाल्मीकि हू पार भये,
जिन 'मरा-मरा' रट लागी।। **29**

ऐसहि भाग्य मिले मोहिं बाबा,
एक यहै वर चाहूँ।
बन निषाद चरणोदक पाऊँ,
युग-युग हेतु जुड़ाऊँ।। **30**

ड्यूढ़ी का मैं बनूँ पहरुआ,
निसदिन गश्त लगाऊँ।
अञ्जनि सुत सम करूँ चाकरी,
तुव दर्शन नित पाऊँ।। **31**

देव दनुज मानव ऋषि मुनि सब,
द्वार तिहारे आवैं।
नारदमुनि वीणा से पावन,
नाम तिहारो गावैं।। **32**

तूही ब्रह्मा तूही विष्णु,
शिव अनादि तूही मैं जानूँ।
तूही इन्द्र बृहस्पति तूही,
त्रिभुवननाथ तुम्हीं को मानूँ।। **33**

जय सृष्टि के कर्त्ता धर्त्ता,
जय प्रतिपालक त्रिभुवन के।
दीनबन्धु हे दयासिन्धु !
जय भक्त तुम्हारे तुम भक्तन के।।**34**

जय प्रेम मूर्ति ! जय शान्तिमूर्ति,
जय दिव्यमूर्ति हे बाबा।
जय पतितपावन भक्तवत्सल !
जय शक्तिपुञ्ज हे बाबा!! **35**

जय अधम-उधारन विपद विदारन,
तेज पुञ्ज अविनाशी !
पावन मूर्ति पूर्ण मर्यादा,
जय घट-घट के वासी ! **36**

ऐसी कृपा होइ मो ऊपर,
विनय करौं कर जोरी।
मन-मन्दिर मम छोड़ न जाना,
शरण पड़ा हूँ तोरी।। **37**

अटल रहे मम श्रद्धा भक्ति,
अटल रहे यह प्रेम की ज्वाला।
जरत-जरत यामें जर जाऊँ,
बुझे तभी यह पावन ज्वाला।। **38**

जो ज्वाला प्रहलादहिं दीन्हीं,
भनैं सन्त सब कोई।
गिरि से गिरेउ अग्नि में डारेउ,
साँच को आँच न होई।। **39**

ध्रुव सम निष्ठा अचल मिले,
जिन साक्षी है ध्रुवतारा।
अमर मिलन हो प्रियतम तुमसे,
छूटे यह जग सारा।। **40**

गुजराती आरती

(अवतार मेहेरबाबा द्वारा रचित, हिन्दी अनुवाद
डॉ. मेहेर ज्योति कुलश्रेष्ठ)

बुझावे नार जहल्लतनी, ए कर कुदरतने फरमां तु।
छे लागी आस भक्तों ने, के बख्शे नूरे इमां तु।।

हे ईश्वर, तुम प्रकृति को हमारी अज्ञान रूपी अग्नि को बुझाने की आज्ञा दो। तुम्हारे प्रेमी आकांक्षा करते हैं कि तुम उन्हें विश्वास का प्रकाश प्रदान करो।

अया मुरशद मेहेरबाबा, चरण पर तुजना धरीए सर।
खुदाना जातथी वाकेफ, थई बैठो मेहेरबां तु।।

हे मुर्शिद मेहेरबाबा ! हम, तुम्हारे प्रेमी, तुम्हारे चरणों पर अपने सर रखते हैं। हे मेहेरबाबा, तुमने स्वयं को अपने ईश्वरत्व के प्रति पूर्णतया सचेत कर लिया है।

तु छे मालिक हकीकतनो, तु आशिक भी ने आरेफ भी।
तु छे दरियाए वहेदत, मारेफतनो होई तूफां तु।।

तुम स्वामियों के स्वामी हो, तुम प्रियतम और प्रेमी दोनों ही हो। अनन्त ज्ञान का स्रोत होने के कारण, तुम एकता का महासागर हो।

हमों रहेरव ने अए सालेक, बखशजे ज्ञान ईजद नु।
के तु परमात्मा ज्ञानी छे, ने मुख्तारे इरफां तु।।

हे प्रभु, हम पथिकों को एज़द, एकमेव पूज्य, का ज्ञान प्रदान करो। क्योंकि, हे परमात्मा, तुम सर्वज्ञ हो और स्वयं ही दैवी ज्ञान हो।

खुदाना प्रेमनो प्यालो, पिलावी मस्त हमने कर।
छे तुज पर जान सदके, साकीया आपिदे पयमां तु।।

हमें ईश्वर के प्रेम के इस प्याले को पीने के लिये दो ताकि हम नशे में चूर हो जायें। हे साक़ी ! हम अपने जीवन तुम्हें अर्पित करते हैं, हमें इसकी एक बूँद दो।

हमारी नाव भर दरिए, तरावे तो हमें तरिये।
हमारा नाखुदा अय मेहेरबाबा, छे निगेबां तु।।

अगर तुम हमारी नाव की, जिस समय यह मझधार में है, पतवार को सँभालो, केवल तभी हम महासागर की सतह पर तैरते रह सकते हैं। हे मेहेरबाबा, हमारी नाव के कप्तान, तुम हमारे रक्षक हो।

**

आरती

(भाऊ कलचुरी कृत)

हुआ लहर से ही है जिसकी, सृष्टी का निर्माण।
उसकी दैवी अनन्तता का, कैसे हो अनुमान।।

आदि सचेतन, शान्ति निकेतन,
नमो ब्रह्म आओ।
मेहेर प्रभु आरती अपनाओ।।

प्रेम दीप मैं हिये जलाऊँ
निविड़ अँधेरा मिटता पाऊँ
अपना सब कुछ तुम्हें चढ़ाऊँ
तुम मुझको सरसाओ।
मेहेर प्रभु आरती अपनाओ।।

जीवन की हर साँस हमारी
बन जाये प्रभु, गती तुम्हारी
हे करुणाकर लीलाधारी

तुम करुणा बरसाओ।
मेहेर प्रभु आरती अपनाओ।।

बने आरती जीवन मेरा
आदि–अन्त का लय हो घेरा
खुले नयन औ, दिखे सवेरा
तुम मुझमें छा जाओ
मेहेर प्रभु आरती अपनाओ।।

**

आरती

(मधुसूदन कृत)

जहाँ कल्पना शब्द न पहुँचे ऐसे अपरम्पार।
'नेति नेति' वेद पुकारें महिमा तोरि अपार।।
मेहेर मन आरती स्वीकारो।
दिव्य सनातन ! परम दया धन ! हे जगदुद्धारो।।
धूप दीप चन्दन चरचाना।
भोग लगाना फूल चढ़ाना।
तुम्हरा ही तुमको लौटाना।

काहे बड़ाई करूँ।। **1** ।।

सकल निधि के तुम कारण हो।
सकल विश्व तारनहारे हो।
तुम सम और नहीं तुमही हो।

हे सत् अवतारो ।। **2** ।।

सकल चराचर तुम्हरी माया।
माया भी तो तुम्हरी छाया।
तुम्हरा अन्त न कोई पाया।

तुम हो अनन्त खरो।। **3** ।।

अपने को जब जो नहिं जाने।
महिमा तुम्हरी क्या पहिचाने।
जो कुछ भी कहते अनजाने।

गुण गाते तुम्हरो।। **4** ।।

सीमा नाहीं तुम्हरी कृपा को।
क्या कोई दे सकता प्रभु तुमको।
भीख तुम्हीं दो प्रेमी जनों को।

नित्य तुम्हें सुमिरों।। **5**।।

**

परवरदिगार प्रार्थना

(मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त)

हे परवरदिगार !

सबके राखनहार और सबकी रक्षा करने वाले !

तुम्हारा कोई आदि नहीं है, और न तुम्हारा कोई अन्त है; तुम अद्वैत हो, तुम तुलना से परे हो, और तुम्हारा पार कोई नहीं पा सकता है।

तुम्हारा कोई रंग और रूप नहीं है, तुम आविर्भाव से रहित हो, और तुम गुणातीत हो।

तुम अपार हो और अगाध हो, कल्पना और धारणा से परे हो, शाश्वत और अनश्वर हो।

तुम अखण्ड्य हो; और दिव्य नेत्रों के सिवाय और किसी भी प्रकार से तुम्हें कोई नहीं देख सकता है।

तुम्हारा अस्तित्व सदैव था, तुम सदैव रहते हो, और तुम सदैव रहोगे।

तुम सर्वत्र हो, तुम हर वस्तु में हो, और तुम हर जगह से परे तथा हर वस्तु से परे भी हो।

तुम आकाश में हो और पाताल में हो। तुम व्यक्त हो और अव्यक्त हो; तुम सब लोकों पर हो, और समस्त लोकों से परे हो।

तुम तीनों भुवनों में हो, और तीन भुवनों से परे भी हो। तुम अगोचर हो और स्वतन्त्र हो।

तुम सृष्टि के रचने वाले हो, स्वामियों के स्वामी हो, समस्त मनों और हृदयों के ज्ञाता हो; तुम सर्वशक्तिमान हो और सर्वव्यापी हो।

तुम अनन्त ज्ञान हो, अनन्त शक्ति हो, और अनन्त आनन्द हो।

तुम ज्ञान के महासागर हो, सर्वज्ञ हो, अनन्त ज्ञान रखने वाले हो, तुम भूत, वर्तमान और भविष्य के ज्ञाता हो, और तुम स्वयं ज्ञान हो।

तुम पूर्ण दयामय हो और सतत् परहितकारी हो।

तुम आत्माओं की आत्मा हो, और अनन्त गुणों से सम्पन्न एक परमात्मा हो।

तुम सत्य, ज्ञान, और परमानन्द की त्रिमूर्ति हो।

तुम सत्य के मूल हो, प्रेम के महासागर हो।

तुम सनातन सत्ता हो, ऊँचों में सबसे ऊँचे हो; तुम प्रभु और परमेश्वर हो; तुम परब्रह्म हो, और परात्पर परब्रह्म भी हो; तुम परब्रह्म परमात्मा हो, अल्लाह हो, इलाही हो, यज़दान हो, अहूरमज़्द हो, और प्रियतम ईश्वर हो।

तुम्हारा नाम एज़द, अर्थात् एकमेव पूज्य है।

**

प्रायश्चित प्रार्थना

(मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त)

हे असीम दया के निधि, प्रभुराज !

हम अपने सब पापों के लिए पश्चात्ताप करते हैं – हर एक विचार के लिये जो असत्य, अनुचित या गन्दा था; हर एक बोले हुए शब्द के लिये जिसे बोलना हमें उचित न था; और हर एक कर्म के लिये जिसे करना हमें उचित न था।

स्वार्थ से प्रेरित हर एक कर्म, शब्द तथा विचार के लिये; तथा द्वेष प्रेरित हर एक कर्म, शब्द और विचार के लिये हम पश्चात्ताप करते हैं।

विशेषकर हर एक कामुक विचार तथा क्रिया के लिये; ऐसे हर एक वचन के लिये जिसको हमने पूरा नहीं किया; सब असत्य वचनों के लिये; और सभी निन्दा, पाखण्ड, दम्भ या लोगों के पीछे उनके दोष बताने के लिये हम अनुताप करते हैं।

और खासकर, दूसरों का नाश करने वाले हर एक कर्म के लिये; दूसरों को दुःख देने वाले हर एक शब्द तथा कर्म के

लिये; तथा दूसरों पर दुःख गिरने की इच्छा करने के लिये हम अनुताप करते हैं।

हे प्रभुराज ! आप हम पर असीम दया करके हमारे किये हुए पापों को क्षमा कीजिये। और वैसे ही आपकी मर्ज़ी के अनुसार विचार करने में, बोलने में तथा कार्य करने में जो हमारी असमर्थता सदा रहती आई है, उसको भी क्षमा कीजिये, यही हमारी आपसे प्रार्थना है।

**

बाबा प्रेमियों एवं मण्डली के लिये प्रार्थना

(मेहेरबाबा की लिखाई हुई)

प्रियतम परमात्मा ! हमारी ऐसी सहायता कर कि हम तुझसे अधिकाधिक प्रेम करें, और अधिक और अधिक और फिर भी उससे भी अधिक प्रेम करें, जब तक कि हम तुझमें मिलकर एक हो जाने के पात्र न बन जायें; और तू हम सबको ऐसी सहायता कर कि हम अन्त अन्त तक बाबा का दामन दृढ़ता से पकड़े रहें।

**

अवतार मेहेरबाबा का विश्वव्यापी सन्देश

मैं सिखलाने के लिये नहीं, बल्कि जगाने के लिये आया हूँ। इसलिये अच्छी तरह समझ लो कि मुझे इस बार कोई आचार–नियम निर्धारित नहीं करने हैं।

सनातन काल से मैं सिद्धान्त और आचार–नियम निर्धारित करता आया हूँ, लेकिन मनुष्य ने उनकी परवाह नहीं की। ईश्वर के उपदेशों के अनुसार चलने में मनुष्य की असमर्थता अवतार के उपदेशों को मज़ाक बना देती है। उसकी सिखलाई हुई दया भावना को व्यवहार में लाने के बजाय, मनुष्य उसके नाम पर लड़ाई–झगड़ा करता रहा है। उसके शब्दों से प्राप्त नम्रता, पवित्रता और सच्चाई को आचरण में लाने के बजाय मनुष्य ने बैर, लोभ, लालच और हिंसा का मार्ग अपनाया है।

चूँकि पुरातन काल में ईश्वर द्वारा निर्धारित किये हुए सिद्धान्तों और आचार–नियमों पर मनुष्य ने ध्यान नहीं दिया इसलिये मैंने अपने इस अवतारी स्वरूप में मौन धारण कर लिया है। तुमने उपदेशों की माँग की और तुम्हें यथेष्ट उपदेश

दिये गये, लेकिन अब उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने का समय आ गया है। ईश्वर के निकट और बिल्कुल निकट पहुँचने के लिये तुम्हें ''मैं'', ''मेरा'' और ''मुझको'' से दूर और बिल्कुल दूर हटना होगा, तुम्हें अपनी खुदी के अलावा और कुछ नहीं त्यागना है। यह बहुत ही सहज है, फिर भी यह प्रायः असम्भव सिद्ध होता है। मेरी कृपा से तुम्हें अपनी सीमित खुदी को त्यागना सम्भव है। मैं उसी कृपा की धारा बहाने के लिये आया हूँ।

मैं फिर से कहता हूँ कि मुझे इस बार कोई आचार–नियम निर्धारित नहीं करने हैं, जब मैं सत्य की धारा बहाऊँगा, जिसको बहाने के लिये मैं आया हूँ, तब मनुष्यों के दैनिक जीवन खुद ही जीते–जागते उपदेश बन जायेंगे। जो शब्द मैंने मुख से नहीं निकाले वे उनमें जीवित होकर बोलेंगे।

मैं अपने को मनुष्य से उसके खुद के अज्ञान के पर्दे में छिपाये रखता हूँ और बिरले लोगों को ही अपना तेज प्रकट करता हूँ। मेरा मौजूदा अवतारी स्वरूप इस कालचक्र का अन्तिम ''अवतार'' है। इसलिये मेरा प्रकटीकरण भारी से भारी होगा। जब मैं अपना मौन खोलूँगा तो मेरे प्रेम की तरंग ब्रह्माण्ड भर में व्याप्त होगी और सृष्टि का प्रत्येक जीवधारी

उसे जानेगा, महसूस करेगा और ग्रहण करेगा। उससे ऐसी सहायता मिलेगी कि हर कोई खुद के बनाये बन्धनों से अपने–अपने तरीके से छुटकारा पाने में समर्थ होगा। मैं वही दैवी प्रियतम हूँ जो तुम्हें इतना अधिक प्यार करता है जितना तुम खुद भी कभी भी अपने आप से नहीं कर सकते। मेरा मौन खुलने से तुम्हें ऐसी सहायता मिलेगी कि तुम अपनी असली खुदी को जानने में अपनी सहायता कर सकोगे।

सारे संसार में फैली यह गड़बड़ी और अन्ध–व्यवस्था अटल थी और इसके लिये कोई दोषी नहीं है। जो होना था वह हुआ और जो होना है वह होकर रहेगा। तुम्हारे बीच मेरे आने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता न था और न है। मुझे आना था, और मैं आ गया। मैं वही ''पुरातन पुरुष'' हूँ।

— मेहेरबाबा

'प्रेम' और 'भक्ति'

प्रेम प्रेमी को जलाता है।
भक्ति प्रियतम को जलाती है।
प्रेम प्रियतम के लिये आनन्द की चाह करता है।
भक्ति प्रियतम से आशीर्वाद की चाह करती है।
प्रेम प्रियतम के बोझ में कन्धा लगाने की चाह करता है।
भक्ति प्रियतम के ऊपर बोझ डालती है।
प्रेम देता है।
भक्ति माँगती है।
प्रेम मौन तथा उत्कृष्ट,
और बाहरी प्रकाशनों से रहित होता है।
भक्ति अपने को बाहरी रूप में प्रकट करती है।
प्रेम को प्रेम करने के लिए प्रियतम की
उपस्थिति अभीष्ट नहीं होती।
भक्ति प्रियतम के प्रति स्नेह प्रकट करने के लिये
प्रियतम की उपस्थिति की माँग करती है।

—मेहेरबाबा

ऊँचे से ऊँचा
The Highest of The High

(देहरादून, 7 सितम्बर, 1953 ई.)

7 सितम्बर 1953 ई. को सुबह, ज़ुरथस्त्र (Zoroaster पारसी धर्म का अवतार) के जन्म–दिवस के अवसर पर, मेहेरबाबा ने कहाः–

"प्रत्येक जीवधारी और हर इन्सान अपने होश में अथवा अनजान में, सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से–किसी न किसी रूप में–अपने व्यक्तित्व (Individuality) को मज़बूती से रखने की कोशिश करता है। किन्तु, जब अन्त में मनुष्य को चेतन अवस्था में अनुभव होता है कि वह अपार, नित्य और अखंडनीय (जो टुकड़ों में नहीं बाँटा जा सकता) है, तब उसको अपने ईश्वरवत् व्यक्तित्व का पूरा ज्ञान होता है, और इस अवस्था में वह अपार ज्ञान, अपार शक्ति और अपार आनन्द का अनुभव करता है। इस प्रकार से मनुष्य ईश्वर बन जाता है, और फिर वह पूर्ण–पुरुष (Perfect Master), सद्गुरु, अथवा कुतुब (सूफीमत में सद्गुरु को कहते हैं) माना जाता है। इस आदमी को पूजना ईश्वर ही को पूजना है।

"जब ईश्वर पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में आता है और मानव–जाति के सामने अपने देवत्व को प्रगट करता है, तब वह अवतार, मसीहा (त्राता), और नबी माना जाता है। इस प्रकार ईश्वर आदमी बन जाता है।

"इसलिए अपार परमात्मा युग युगान्तर में, और सब कालचक्रों में, अपनी अपार दया के वशीभूत होकर मनुष्य रूप धारण करके इन्सान की बराबरी पर नीचे उतरता है और इस प्रकार इन्सान के बीच में मौजूद होने की मर्ज़ी करता है, परन्तु मानव जाति के बीच उसकी इस साक्षात् मौजूदगी को न समझ सकने के कारण लोग उसको दुनियाँ का एक साधारण मनुष्य मानते हैं। फिर भी, जब वह अपने को युग का अवतार होने का ऐलान करके अपने ईश्वरत्व को पृथ्वी पर दृढ़ता से स्थापित करता है, तब कुछ लोग तो उसकी पूजा करते हैं जो उसको ईश्वरवत् मानते हैं, और थोड़े से लोग उसकी स्तुति (गुण–गान) करते हैं जो उसको पृथ्वी पर मौजूद ईश्वर के रूप में जानते हैं। परन्तु, बाक़ी इन्सान के हिस्से में उसकी निन्दा करना और उसको बुरा–भला कहना ही आ पड़ता है, जबकि वह उनके बीच में साक्षात् मौजूद होता है।

"यही कारण है कि मनुष्य रूप में ईश्वर अपने को अवतार होने का ऐलान करके मानव जाति से, जिसके लिये वह अपने अपार प्रेम के वशीभूत होकर इतना नीचे उतरता है, अपने को दारुण दुःख दिलवाता तथा सतवाता है, अपना अपमान और अपनी भर्त्सना (भर्त्सना–निन्दा) कराता है, ताकि इन्सान अवतार के रूप में ईश्वर की अभिव्यक्ति (प्रकट या जाहिर होना Manifestation) की निन्दा करने के व्यवहार द्वारा, कितने ही अप्रत्यक्ष रूप से सही, ईश्वर के अपार और शाश्वत (जिसका नाश अनादि आदि से लेकर अनन्त अन्त तक कभी नहीं होता; अमर, नित्य) अवस्था वाले अस्तित्व पर ज़ोर देवें।

"अवतार सदा एक और वही होता है, क्योंकि ईश्वर सदा एक और वही, नित्य, अखंडनीय और अपरम्पार है, जो अपने आपको मनुष्य रूप में अवतार, मसीहा, नबी तथा सनातन सत्ता–ऊँचे से ऊँचा–की तरह प्रगट करता है। यह नित्य रूप से एक और वही अवतार समय समय पर, विभिन्न मानवीय रूप तथा विभिन्न नाम धारण करके, विभिन्न देशों में, अपने को बारम्बार प्रगट करता है। वह बारम्बार अपनी

अभिव्यक्ति मानव–जाति को अज्ञान के खड्ड से निकाल कर ऊपर लाने और माया के बन्धन से छुटकारा पाने में उसकी सहायता करने के प्रयोजन से सत्य को विभिन्न लिबासों (रूपों) और विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करने के लिये करता है।

"ईश्वर के सबसे ज़्यादा माने गये और सबसे ज़्यादा पूजे जाने वाले अवतारों में ज़ुरथस्त्र का अवतार सबसे पहले का है। वह राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा और मुहम्मद के अवतारों से पहले हुआ था। हज़ारों वर्ष पूर्व ज़ुरथस्त्र ने दुनियाँ को सत्य का सार तीन मूल सूत्रों–पवित्र विचार, पवित्र वचन, और पवित्र कर्म–के रूप में दिया था। ये मूलभूत सिद्धान्त हर कालचक्र में उस युग के अवतार के द्वारा, किसी न किसी रूप में, सीधे अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, मानव जाति के सामने लगातार प्रगट किये गये थे, और इसी प्रकार हर कालचक्र में बराबर प्रगट किये जाते हैं, जैसे जैसे अवतार इन्सान को उसके जाने बिना सत्य की ओर ले जाता है। पवित्र विचार, पवित्र वचन और पवित्र कर्म के इन सूत्रों को अमल में लाना इतना आसान नहीं है जितना कि दिखाई पड़ेगा, यद्यपि यह असम्भव भी नहीं है।

परन्तु, इन सिद्धान्तों को ईमानदारी से और अक्षर अक्षर करके आचरण में लाते हुये जीवन बिताना प्रत्यक्ष रूप से ऐसा असम्भव है जैसा कि जीवन के बीच में ज़िन्दा मौत का आचरण करना है।

"दुनियाँ में बेशुमार साधू, महात्मा, सन्त, योगी और वली हैं, यद्यपि उनमें सच्चों की संख्या बहुत बहुत कम है। ये थोड़े सच्चे जन अपनी आत्मा की अवस्था के अनुसार अपना अपना निजी दर्जा रखते हैं, जो न तो साधारण इन्सान की सतह के बराबर होता है और न ऊँचे से ऊँचे की अवस्था के धरातल पर होता है।

"मैं न महात्मा हूँ और न महापुरुष हूँ, न साधू हूँ और न सन्त हूँ, न योगी हूँ और न वली हूँ। जो लोग धन दौलत को पाने की अथवा अपने आधिपत्य (इन्सान के क़ब्जे में रहने वाली संसारी चीज़ें, अधिकार आदि) बनाये रखने की अभिलाषा से मेरे पास आते हैं, जो लोग मेरे द्वारा यातना और क्लेश से राहत पाना चाहते हैं, और जो लोग अपने दुनियावी मनोरथों को पूरा और संतुष्ट करने के लिये मेरी सहायता माँगते हैं, मैं

उनसे एक बार फिर ऐलान करके कहता हूँ कि चूँकि मैं कोई साधू, सन्त या महात्मा, महापुरुष या योगी नहीं हूँ, इसलिये मेरे द्वारा इन चीज़ों को पाने की चाह करना निपट निराशा को न्योता देना है, यद्यपि यह निराशा दिखावटी ही होती है क्योंकि अन्त में वह खुद दुनियावी आवश्यकताओं और मनोरथों का पूरा रूपान्तर करने में निश्चित रूप से सहायक होती है।

"साधू, सन्त, योगी, वली और इसी प्रकार के अन्य जन, जो बीच की स्थिति में होते हैं, चमत्कार दिखा सकते हैं और दिखाते ही हैं, तथा जो लोग सहायता तथा राहत के लिये उनके पास जाते हैं उनकी क्षणिक भौतिक आवश्यकताओं को वे पूरा कर सकते हैं।

"इसलिये अब यह सवाल उठता है कि अगर मैं न साधू हूँ, न सन्त हूँ, न योगी हूँ, न महापुरुष हूँ और न वली हूँ, तब फिर मैं क्या हूँ ? ऐसी सूरत में यह स्वाभाविक कल्पना होगी कि या तो मैं साधारण मानव हूँ, या फिर मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ। लेकिन, मैं एक बात निश्चित रूप से कहता हूँ, और वह यह है कि मेरा शुमार सच्चे साधुओं, सन्तों, योगियों और इसी

प्रकार के अन्य जनों की बीच वाली अवस्था रखने वालों में कभी नहीं किया जा सकता।

"अब अगर मैं एक साधारण मनुष्य हूँ तो मेरी योग्यतायें और मेरी शक्तियाँ सीमित हैं–अर्थात्, मैं मामूली इन्सान से बढ़कर या उससे भिन्न नहीं हूँ। यदि लोग मुझको ऐसा मानते हैं, तो उनको मुझसे चमत्कारों अथवा आत्मा के पथ–प्रदर्शन के रूप में किसी भी अलौकिक सहायता की आशा न करनी चाहिए; और, अपने मनोरथों की पूर्ति के लिये उनका मेरे पास आना भी बिल्कुल बेकार होगा।

"दूसरी ओर, अगर मैं साधारण मनुष्य के धरातल से परे हूँ तथा सन्तों और योगियों के दर्जे से कहीं अधिक परे हूँ, तब मुझे अवश्य ऊँचे से ऊँचा होना चाहिए। इस सूरत में मुझको अपनी मानवीय बुद्धि और सीमित मन से आँकना और मेरे पास सांसारिक मनोरथ लेकर आना तुम्हारी हद दर्जे की नादानी और साथ साथ बिल्कुल अज्ञानता होगी, क्योंकि बुद्धि की कितनी भी कलाबाज़ी मेरी रीतियों को कभी नहीं समझ सकी और न मेरी अपार अवस्था का अनुमान लगा सकी है।

"अगर मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ, तो मेरी मर्ज़ी क़ानून है, मेरी इच्छा क़ानून का नियमित संचालन करती है, और मेरा प्रेम विश्व को स्थिर रखता है। जो कुछ भी तुम्हारे दिखावटी संकट और क्षणिक क्लेश हैं, वे सब तुम्हारे अन्तिम कल्याण के लिये मेरे प्रेम के फलस्वरूप हैं। इसलिये अपनी दशाओं से दुनियावी छुटकारा पाने के लिये मेरे पास आना और अपने दुनियावी मनोरथों को पूरा कराने की मुझसे आशा करना, मुझको असम्भव बात करने के लिये–अर्थात्, जो कुछ मैंने पहले ही नियत कर दिया है उसको मिटा देने के लिये–कहना होगा।

"अगर तुम सच्चाई से और पूरे विश्वास के साथ अपने बाबा को ऊँचे से ऊँचा स्वीकार करते हो, तो तुमको अपनी इच्छाओं की पूर्ति की अभिलाषा करने की बजाय अपने जीवन को उनके चरणों में निछावर कर देना उचित है। बाबा जैसे ऊँचे से ऊँचे के चरणों में तुम्हारी एक ज़िन्दगी नहीं, बल्कि तुम्हारे लाखों जीवनों का बलिदान करना तुम्हारा केवल ज़रा सा त्याग होगा, क्योंकि बाबा का अपार प्रेम तुमको तुम्हारे क्षण–भंगुर जीवन की अँधेरी सकरी गलियों से कुशलतापूर्वक ले जाने के लिये एकमात्र निश्चित और अचूक रहबर (राह बताने वाला) है।

"वे लोग मुझको नहीं बाँध सकते जो अपना तन, मन और धन–सम्पत्ति आदि सब कुछ समर्पित करते हुए–जो उन्हें एक दिन मजबूरन त्यागने ही पड़ेंगे–किसी मतलब से आत्मसमर्पण करते हैं; इस कारण से आत्मसमर्पण करते हैं कि वे समझते हैं कि परमानन्द के अमर भंडार को प्राप्त करने के लिये उनको सभी क्षणिक सांसारिक आधिपत्यों का त्याग करना ज़रूरी है। इस प्रकार और बड़ा लाभ पाने की इस आकांक्षा से उनका लगाव फिर भी आत्मसमर्पण से बना रहता है, और इस रूप में वह आत्मसमर्पण पूरा नहीं हो सकता।

"तुम सबको मालूम हो कि अगर मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ, तो मेरा नियत कर्त्तव्य इस बात का तक़ाज़ा करता है कि मैं तुम्हारे सभी आधिपत्यों और तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को तुमसे निकाल लूँ, तुम्हारे सभी मनोरथों का नाश कर दूँ और तुम्हारी इच्छाओं को पूरा करने के बजाय तुमको इच्छारहित बना दूँ। साधू, सन्त, योगी और वली तुमको जो कुछ तुम चाहो वह दे सकते हैं; परन्तु मैं तो तुम्हारी ज़रूरतें ले लेता हूँ और तुमको आसक्तियों से मुक्त कर देता तथा तुमको अज्ञान के बन्धन से छुड़ा देता हूँ। मैं तो लेने वाला हूँ, और जो कुछ तुम चाहो वह अथवा जैसा तुम चाहो वैसा देने वाला नहीं हूँ।

"केवल बुद्धिजीवी लोग मुझको अपनी बुद्धि से नहीं समझ सकते। अगर मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ, तो बुद्धि के लिये मेरा पार पाना असम्भव हो जाता है, और वैसे ही इन्सान के सीमित मन के लिये मेरी रीतियों की थाह पाना असम्भव है।

"मैं उन लोगों को प्राप्त नहीं होता जो मुझसे प्रेम करते हुए स्तुति में लीन सम्मानपूर्वक खड़े रहते हैं। मैं उन लोगों के हेतु नहीं हूँ जो मेरी खिल्ली उड़ाते हैं और तिरस्कार के साथ मेरी ओर संकेत करते हैं। मैं इस हेतु भी नहीं हूँ कि करोड़ों आदमियों की भीड़ मेरे चारों ओर इकट्ठी होवे। मैं उन थोड़े से चुनिन्दा लोगों के लिये हूँ जो भीड़ के बीच में बिखरे हुए ख़ामोशी से तथा बिना आडम्बर के अपना सब कुछ– तन, मन, और धन–सम्पत्ति आदि आधिपत्य–मुझको अर्पित कर देते हैं। इससे भी ज़्यादा मैं उन लोगों के निमित्त हूँ जो अपना सब कुछ समर्पित कर देने के बाद अपने आत्मसमर्पण की ओर फिर कभी विचार तक नहीं करते। वे सब लोग मेरे हैं जो अपने आत्मत्याग के विचार को भी छोड़ने के लिये तैयार हैं, और जो

प्रचंड कार्य–कलाप के बीच निरन्तर जागरूक रहते हुए मेरी एक नज़र अथवा इशारे पर सत्य के काज के निमित्त अपने जीवन बलिदान करने के लिये अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं। जो लोग भीषण से भीषण विपत्तियों का सामना स्वेच्छापूर्वक और उल्लास के साथ करने का अडिग साहस रखते हैं, जिनका मुझमें अटल विश्वास है और जो अपने आनन्द व आराम को छोड़ कर मेरी छोटी से छोटी इच्छा को पूरा करने के लिये उत्सुक रहते हैं, वे वास्तव में मुझसे सच्चाई के साथ प्रेम करते हैं।

"मेरी नज़र में वह नास्तिक (ईश्वर को न मानने वाला मनुष्य), जो अपनी दुनियाँवी ज़िम्मेदारियों को अपना सम्मानित कर्त्तव्य मानते हुए उनको विश्वास के साथ पूरा करता है, उस मनुष्य से कहीं अधिक धन्य है जो अपने को ईश्वर में दृढ़ विश्वास करने वाला मानता है और फिर भी ईश्वरीय नियम के द्वारा उसके लिये निश्चित की गई ज़िम्मेदारियों से खिसकता तथा क्लेश से राहते पाने की खोज में साधू, सन्त और योगियों के पीछे दौड़ता फिरता है, यद्यपि इन क्लेशों को भोगने से उसको अन्त में अमर मुक्ति मिल जाती।

"अपनी एक आँख तो हाड़–माँस के मनमोहक मज़ों में लगाये रखना और दूसरी आँख से अमर आनन्द की एक झलक देखने की आशा करना असम्भव ही नहीं है, बल्कि यह हद दर्जे का पाखंड है।

"मैं तुमसे ऐसी आशा नहीं कर सकता कि जो ज्ञान मैं तुम्हें देना चाहता हूँ उस सबको तुम फ़ौरन समझ जाओगे। यह तो मेरा काम है कि मैं तुम्हारे सीमित मनों में वे बीज बोते हुए तुम्हें युग–युगान्तर में समय समय पर आत्म–जागृति प्रदान करूँ जो (बीज) तुम्हारे उचित ध्यान देने व देखभाल करने पर कालान्तर में अवश्य अंकुरित होते, पनपते और उस सच्चे ज्ञान का फल धारण करते हैं जिसकी प्राप्ति स्वाभाविक रूप से तुम्हारी है।

"दूसरी ओर, यदि अपने अज्ञान से प्रेरित होकर तुम अपना निजी रास्ता ही पकड़े जाने का हठ करते हो, तो अपने विकास का यह चुनाव करने से तुम्हें कोई नहीं रोक सकता; क्योंकि वह भी विकास है जो–चाहे वह कितना ही मन्द और दुःखदायी हो–अन्त में और असंख्य जन्मों के बाद तुम्हें अवश्य

ही वही अनुभव कराता है जो मैं चाहता हूँ कि तुम अभी जान लो। अपने को माया की भूलभुलैयों और खुद पैदा किये हुए दुःख में, जिसकी मात्रा सच्चे लक्ष्य के विषय में तुम्हारी अज्ञानता की सीमा के ऊपर निर्भर होती है, और ज़्यादा फँसने से बचने के लिये तुम अभी जागो, जागो। इस ओर ध्यान दो और अज्ञान का अनुभव उसके असली स्वरूप में करते हुए स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न करो। अपने और ईश्वर के प्रति ईमानदार बनो। कोई आदमी दुनियाँ को और अपने पड़ोसियों को बेवकूफ़ बना सकता है, लेकिन वह सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) ईश्वर से कुछ भी कभी नहीं छिपा सकता—ऐसा ईश्वरीय नियम है।

"मैं तुम सबसे, जो मुझको ऊँचे से ऊँचा मान कर मेरे पास आते हो, और उन सब लोगों से जो मुझको ऐसा मान कर मेरे पास आने की आकांक्षा करते हैं, ऐलान करके कहता हूँ कि तुमको धन दौलत और सांसारिक लाभों की लालसाओं से भरा हुआ हृदय लेकर मेरे पास कभी न आना चाहिए, बल्कि अपना सब कुछ—तन, मन और अपने अधिकार की हर चीज़ तथा उनके प्रति अपनी सारी आसक्तियाँ—देने की प्रबल व जोशीली

इच्छा लेकर आना चाहिए। अपनी स्थितियों से अपने को निकालने के निमित्त तुम मुझको न खोजो, किन्तु मेरी मर्ज़ी के प्रति अपने को पूरे दिल से समर्पित करने के लिये मेरी खोज करो। सांसारिक आनन्द और क्षणिक आरामों के लिये मुझसे न चिपटो, बल्कि मेरे चरणों में अपने आनन्द और आराम का बलिदान करते हुए सब परिस्थितियों में मेरे पीछे लगे रहो। मेरी खुशी को अपना उल्लास, और मेरे आराम को अपना विश्राम बनाओ। कोई अच्छा धन्धा पाने के लिये मेरा आशीर्वाद न माँगो, किन्तु मुझसे कोई बदला पाने की आशा न रखते हुए अधिकाधिक परिश्रम तथा ईमानदारी से मेरी सेवा करने की अभिलाषा करो। अपनी अथवा अपने इष्ट जनों की ज़िन्दगी की रक्षा के लिये मुझसे कभी प्रार्थना न करो, किन्तु मुझसे यह प्रार्थना करो कि मैं तुम्हें स्वीकार कर लूँ और तुम्हें मेरे हेतु अपना जीवन दे देने की अनुमति प्रदान करूँ। अपनी शारीरिक व्याधियाँ मुझसे चंगा कराने की आशा कभी न करो, किन्तु अपने अज्ञान का इलाज मुझसे कराने के लिये मुझसे विनती करो। मुझसे कोई चीज़ लेने के लिये अपने हाथ कभी न फैलाओ, किन्तु उनको मेरी स्तुति में ऊँचा उठाओ जिसको ऊँचे से ऊँचा मान कर तुम मेरे पास आये हो।

"अगर मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ तो फिर मेरे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है; और, यद्यपि मैं लोगों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये चमत्कारी कार्य नहीं करता, क्योंकि उनकी पूर्ति आदमी को नश्वर जीवन के जाल में अधिकाधिक फँसावेगी, तो भी समय समय पर ख़ास अवधियों में मैं अपनी अपार शक्ति को चमत्कारों के रूप में प्रदर्शित करता हूँ। किन्तु, यह प्रदर्शन मैं मानव जाति तथा समस्त जीवधारियों के आध्यात्मिक उत्थान और कल्याण के लिये ही करता हूँ।

"फिर भी, जो लोग मुझसे प्रेम करते हैं और मुझमें अटल विश्वास रखते हैं उनको बहुधा चमत्कारी अनुभव हुए हैं, और लोगों ने यह मान लिया है कि मेरी नज़र अथवा कृपादृष्टि उनके ऊपर होने के कारण उनको ये अनुभव हुए हैं। परन्तु मैं सबको जताना चाहता हूँ कि ऐसे व्यक्तिगत चमत्कारी अनुभवों का सम्बन्ध ऊँचे से ऊँचे की मेरी अवस्था से लगाना मेरे प्रेमियों के लिये ठीक नहीं है। यदि मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ, तो मैं दैवी नियम के संचार में होने वाली माया की इन भ्रमकारी क्रीड़ाओं से ऊपर हूँ। इसलिये मुझको इस रूप में मानने वाले मेरे प्रेमियों को, अथवा उन लोगों को जो बिना जाने हुए मुझसे दूसरे मार्गों

के द्वारा प्रेम करते हैं, जो कुछ भी चमत्कारी अनुभव होते हैं, वे मुझमें उनके ही दृढ़ विश्वास के फल स्वरूप होते हैं। उनका अटल विश्वास बहुधा माया के क्रीड़ा—मार्ग को लाँघता हुआ उनको वे अनुभव देता है जिनको वे चमत्कार कहते हैं।

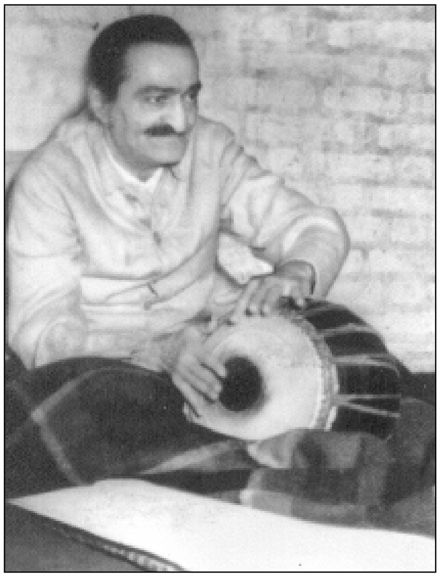
"अटल विश्वास के द्वारा प्राप्त किये गये ऐसे अनुभव अन्त में कल्याण करते हैं, और जिन लोगों को वे अनुभव होते हैं उनको वे माया के और अधिक तथा और बड़े बन्धनों में नहीं फँसाते।

"यदि मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ, तो मेरी व्यापक मर्ज़ी (Universal Will) की एक इच्छा ही सबको एक पल में ईश्वर का अनुभव देने और इस प्रकार सृष्टि के प्रत्येक जीवधारी को अज्ञान के फन्दों से मुक्त करने के लिये काफी है। किन्तु, जो ज्ञान दैवी नियम के अनुसार अज्ञान के अनुभव के द्वारा प्राप्त होता है वह धन्य है। अज्ञान के बीच में इस ज्ञान की प्राप्ति तुम्हारे लिये सद्‌गुरुओं के पथ—प्रदर्शन के द्वारा, तथा ऊँचे से ऊँचे की शरण में आत्मसमर्पण करने से, सम्भव होती हैं।

—मेहेर बाबा

मेहेर चालीसा

मेहेर बाबा की संक्षिप्त जीवनी, आरती, प्रार्थनायें, ऊँचे से ऊँचा संदेश



अवतार मेहेर बाबा कॉस्मिक फ़ाउन्डेशन द्वारा प्रकाशित